नाम- डॉ॰ सुजाता गुप्ता   पत्र - I   व्याख्यान - I
दिनांक - 30.05.2020
विभाग- हिंदी   शीर्षक - प्रसाद एवं प्रसादोत्तर हिंदी नाटक
वर्ग- स्नातक प्रथम वर्ष   साहित्य का इतिहास

प्र०- प्रसाद एवं प्रसादोत्तर हिंदी नाटक-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास लिखें।

प्रसाद युग के हिंदी नाटक →

हिंदी नाट्य साहित्य के अभिनव मंदिर के निर्माता तथा प्रतिमा प्रतिष्ठापक तथा मंदिर के दिव्य शिखर के श्रेष्ठ थे। उन्होंने कुल तेरह विविध विषयात्मक नाटकों की रचना की थी। उनके नाटक हैं — सज्जन, कल्याणी, परिणय, प्रायश्चित, राज्यश्री, विशाख, अजात-शत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, कामना, एक घूँट, करुणालय, और ध्रुव-स्वामिनी। उदात्त सांस्कृतिक चेतना, प्रखर शब्द चेतना, अतीव गौरव, मानवतावादी करुणा और काव्यात्मकता के संकेत इन नाटकों में विद्यमान हैं।

प्रसादोत्तर हिंदी नाटक ⇒

प्रसादोत्तर ऐतिहासिक नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी का नाम अग्रगण्य है, उन्होंने रक्षाबंधन, शिवासाधना, प्रतिशोध, आहुति, उद्धार आदि लगभग बीस नाटक किये। वृंदावनलाल वर्मा ने झांसी की रानी, पूर्व की ओर, ललित विक्रम आदि नाटक की रचना की है।

हिन्दी समस्या नाटकों का प्रणयन सर्वप्रथम पं लक्ष्मी नारायण मिश्र ने किया। सन् 1930 से 1932 तक उन्होंने सन्यासी, राक्षस का मन्दिर, मुक्ति का रहस्य, राजयोग, आधी रात तथा सिन्दूर की होली नामक समस्या नाटकों की रचना की।

उन्होंने नारद की वीणा, गरुड़ ध्वज, वत्सराज, मृत्युंजय, चक्रव्यूह, जगद्गुरु, वितस्ता की लहरें

एवं चित्रकूट में भारतीय संस्कृति का शुभ्र चित्र प्रस्तुत किया है।

ऐतिहासिक, सामाजिक नाटककारों में सेठ गोविन्ददास प्रमुख है। उन्होंने कुलीनता, हर्ष, शशिगुप्त, शेरशाह, अशोक सिंहल द्वीप, विजय बेलि, भिक्षु से गृहस्थ गृहस्थ से भिक्षु, विश्वासघात आदि ऐतिहासिक नाटकों की रचना की है। सामाजिक नाटकों में दलित कुसुम, पतित सुमन, विश्वप्रेम, कर्त्तव्य और कर्ण प्रसिद्ध है।

सामाजिक नाटककारों में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' बहुत प्रसिद्ध है उन्होंने स्वर्ग की झलक, छठा बेटा, कैद, उड़ान, अंजो दीदी आदि में सामाजिक समस्या का मार्मिक चित्र अंकित किया है।

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न कलाकार पं॰ उदयशंकर भट्ट ने अनेक ऐतिहासिक नाटकों में विक्रमादित्य, दाहर, मुक्तिपथ, शक विजय आदि प्रसिद्ध है। सामाजिक नाटकों में कमला, उन्हीं ने अन्त, क्रांतिकारी नया समाज, पार्वती आदि प्रसिद्ध हैं। पौराणिक नाटकों में अम्बा, समर, विजय प्रसिद्ध है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक →

सन् 1950 के बाद हिंदी नाट्य साहित्य में कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीनता के दर्शन होते है। हिंदी नाटक की यह यात्रा स्पष्टतः तीन मोड़ों से होकर अग्रसर होती है। हिंदी नाटक पहले मोड़ पर श्री जगदीश चन्द्र माथुर, मोहन-राकेश, विष्णु प्रभाकर, विनोद रस्तोगी, डॉ॰ लक्ष्मीनारा-यण लाल आदि की रचनाएं है। श्री माथुर का पहला नाटक कोणार्क (1951) में, शारदीया (1959) में और

पहला) राजा (१९६९) में प्रकाशित हुआ जिसमें संस्कृत नाट्य शिल्प, लोक नाट्य शिल्प एवं पाश्चात्य नवीन नाट्य शिल्प का प्रयोग हुआ है।

मोहन राकेश ने 'अषाढ़ का एक दिन', लहरों के राजहंस' और 'आधे-अधूरे' लिखकर अपनी अलग पहचान बना ली।

इस मोड़ की अन्य नाट्य रचनाएँ हैं- नये हाथ, आज़ादी के बाद, बर्फ की मीनार, अंधा कुआँ और डॉक्टर।

दूसरा मोड़ - साठोत्तरी प्रयोगशील नाटककारों में विपिन कुमार अग्रवाल, ज्ञानदेव, अग्निहोत्री, अमृतराय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, लक्ष्मीकांत वर्मा आदि हैं। विपिन कुमार अग्रवाल के 'तीन अपाहिज' संग्रह ग्यारह लघुनाटक हैं जिनमें जन-जीवन में व्याप्त असंगतियों का नग्न चित्रण हुआ है। सक्सेना की बकरी, वर्मा की अपना, अपमानित, रोशनी, एक नदी है, अमृत राय की चिन्दियों की कॉलर, शताब्दी और हमलोग आदि रचनाएँ इसी कोटि की हैं।

तीसरा मोड़ - साठोत्तरी प्रयोगशील नाटकों की नई श्रृंखला १९७० के आस-पास प्रारंभ होती है। नाट्य-रचना की इस प्रगति को अन्य दिशा से बल मिला। बंगला, मराठी, और कन्नड़ आदि के नाटकों के अनुवाद से, इस दिशा में जिन कलाकारों को विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वे हैं बंगला के बादल सरकार (एवं इन्द्रजित, बाकी इतिहास, पगला घोड़ा, अबु हसन, सारी रात) मराठी के विजय तेन्दुलकर (खामोश अदालत

जारी है, घासीराम कोतवाल, गिद्ध और कन्नड़ के गिरीश कर्नाड (तुगलक, हम वदन) जिन हिंदी कलाकारों ने इस नाट्य प्रणाली में योगदान किया उनमें उल्लेख्य हैं — डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल (रातरानी, दर्पन कलंकी, मिस्टर अभिमन्यु, कर्फ्यू, अब्दुल्ला, दीवाना, व्यक्तिगत, एक सत्य हरिशचंद्र, सुरेन्द्र वर्मा (तीन नाटक, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक) शंकर शेष - बिन बाती के दीप, फन्दी बंधन, अपने-अपने, खजुराहो के शिल्पी, एक और द्रोणाचार्य, रमेश वत्स (देवयानी का कहना है, तीसरा हाथी) मणिमधुकर (रस-गन्धर्व) मुद्राराक्षस (तिलचट्टा, तेन्दुआ, मर-जीवा) नरेन्द्र कोहली (शम्बूक की हत्या)।